

भारत सरकार
विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय
बायोटेक्नोलॉजी विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 1938

उत्तर देने की तारीख : 11 फरवरी, 2026

स्वदेशी एंटीबायोटिक दवाओं का विकास

1938. डॉ. राज कुमार चब्बेवाल:

क्या विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या देश ने पहली स्वदेशी एंटीबायोटिक दवा विकसित की है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ख) क्या सरकार देश में ऐसी और स्वदेशी एंटीबायोटिक दवाओं के विकास के लिए कोई अन्य उपाय कर रही है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके कारण क्या हैं; और
- (ग) इन स्वदेशी एंटीबायोटिक दवाओं के विकास से देश की जनता को मिलने वाले संभावित लाभों का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(डॉ. जितेन्द्र सिंह)

(क) जी हां, नेफिथ्रोमाइसिन को वॉकहार्ट समूह द्वारा विकसित किया गया है। यह एक नवीन मैक्रोलाइड है, जिसे विशेष रूप से सामुदाय-जनित जीवाणु निमोनिया (सीएबीपी) के उपचार के लिए तैयार किया गया है। भारत में नेफिथ्रोमाइसिन के तीसरे चरण के नैदानिक अध्ययन को जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद (बाइरैक), जो धारा 8 के अंतर्गत बायोटेक्नोलॉजी विभाग (डीबीटी) का एक गैर-लाभकारी सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम है, के द्वारा आंशिक रूप से सहायता दी गई थी। केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) ने सीएबीपी से पीड़ित वयस्कों (≥18 वर्ष) के उपचार के लिए नेफिथ्रोमाइसिन टैबलेट 400 मिलीग्राम की बिक्री और वितरण के लिए मेसर्स वॉकहार्ट लिमिटेड को विपणन प्राधिकार की अनुमति जारी की है।

(ख) सरकार स्वदेशी एंटीबायोटिक दवाओं के अविष्कार और विकास को बढ़ावा देने के लिए सुनियोजित वित्तपोषण और इको-सिस्टम सहायता के माध्यम से अनुसंधान एवं विकास तथा नवाचार को सहायता दे रही है। सरकार की सहायता प्रारंभिक चरण के अनुसंधान एवं विकास, प्रारंभिक सत्यापन और उत्पादों के व्यावसायीकरण सहित अनुसंधान एवं विकास की पूरी प्रक्रिया के लिए उपलब्ध है। विशिष्ट प्रयास इस प्रकार हैं:

- बायोटेक्नोलॉजी विभाग ने विश्व स्वास्थ्य संगठन के देश कार्यालय के सहयोग से भारत में नई एंटीबायोटिक दवाओं के अनुसंधान, अविष्कार और विकास के लिए दिशा-निर्देश देने हेतु रोगजनकों की एक भारतीय प्राथमिकता सूची तैयार की है।
- बायोटेक्नोलॉजी विभाग अपनी 'जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान नवाचार और उद्यमिता विकास (बायो-राइड)' योजना के माध्यम से माइक्रोबैक्टीरियम ट्यूबरक्यूलेसिस, स्टैफिलोकोकस ऑरियस, एस्चेरिचिया कोलाई जैसे रोगजनकों के लिए रोगाणुरोधी उपचार, एंटीबायोटिक संयोजन, इसके प्रभाव और दवा के पुनर्उपयोग संबंधी अध्ययनों को आगे बढ़ाने के लिए अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं की सहायता कर रहा है।
- औषध विभाग 'फार्मा-मेडटेक सेक्टर में अनुसंधान और नवाचार को प्रोत्साहन (पीआरआईपी)' नामक अपनी योजना के माध्यम से नई दवाओं के विकास और प्रमाणीकरण के लिए सहायता प्रदान कर रहा है।
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग ने रोगाणुरोधी प्रतिरोध (एएमआर) से निपटने के लिए प्राकृतिक या कृत्रिम रूप से छोटे रासायनिक अणुओं के विकास की पहल की है।
- वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद - केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीडीआरआई), लखनऊ द्वारा एंटीबायोटिक दवाओं के अविष्कार के लिए कई परियोजनाएं कार्यान्वित की जा रही हैं।

(ग) स्वदेशी एंटीबायोटिक दवाओं के विकास से एएमआर से निपटने की राष्ट्रीय क्षमता सुदृढ़ होगी, जिससे उपचार में कठिनाई का सामना करने वाली/दवा प्रतिरोधी संक्रमणों के उपचार की क्षमता में सुधार होगा, इससे प्रभावी और किफायती उपचार तक पहुंच बढ़ेगी, आत्मनिर्भरता बढ़ेगी और सार्वजनिक स्वास्थ्य परिणामों में सुधार होगा। इससे घरेलू अनुसंधान और उत्पादन को भी बढ़ावा मिलेगा।
